| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

दिनकर की कविताओं में स्वाधीनता संघर्ष का स्वरूप

Govind Singh Meena

Associate Professor in Hindi Department, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

उनकी प्रसिद्ध कविताओं में से एक की पंक्तियां 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है', स्वतंत्रता आंदोलन का एक बड़ा नारा बना । देशभक्ति पर उनकी कविताओं ने युवकों को विशेष रूप से प्रभावित किया तथा वे अत्यधिक लोकप्रिय थीं । दिनकर की प्रतिष्ठा केवल उनकी देशभक्ति की भावना पर ही आधारित नहीं है ।

परिचय

धली हुई दिशाएँ, छाने लगा कुहासा
कुचली हुई शिखा से आने लगा धुँआ–सा।
कोई मुझे बता दे, क्या आज हो रहा है
मुँह को छिपा तिमिर में क्यों तेज रो रहा है?
दाता पुकार मेरी, संदीप्ति को जिला दे
बुझती हुई शिखा को संजीवनी पिला दे।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ
चढ़ती जवानियों का शृंगार माँगता हूँ।
('आग की भीख' कविता)

स्वदेश हित अंगार माँगने एवं चढ़ती जवानियों का शृंगार माँगने वाले राष्ट्रकवि दिनकर के संपूर्ण रचनाकर्म पर दृष्टिपात करने पर यह निर्विवाद रूप से अभिप्रमाणित होता है कि जैसा ओज, तेज, क्रांति और विद्रोह का स्वर समयसूर्य दिनकर की कविताओं में मिलता है, उनके समकालीन तथा परवर्ती अन्य किसी भी सहित्यकार में नहीं मिलता। राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता की अविरल धारा सदा उनके साहित्य में प्रवाहित हुई है। राष्ट्रकवि दिनकर विराट चेतना के कवि हैं। वे महती संवेदना और संचेतना के धनी हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति एक व्यापक फलक प्राप्त करती है जिसमें सर्वत्र क्रांति और विद्रोह की गूँज सुनाई देती है। दिनकर का युवाकाल भारतीय इतिहास का वह युग था जब भारत की राष्ट्रीयता और देशभक्ति बिट्रिश-साम्राज्यवादसे लोहा ले रही थी। मध्यवर्ग के लोगों में शासन–सत्ता के प्रति घोर अविश्वास था और वे विदेशी राज के शिकंजों से मुक्ति पाने के लिए हर प्रकार का बलिदान करने के लिए सन्नद्ध थे। दिनकर उसी मध्यवर्ग में एक संवेदनशील युवक थे, जो जवाहर, सुभाष, जयप्रकाश और नरेंद्रदेव के साथ था, जो बिना स्वराज प्राप्ति के एक क्षण भी चुप नहीं बैठना चाहता था।

दिनकर की रचनाओं में आरंभ से ही क्रांति और विद्रोह के स्वर सुनाई देते हैं। स्वतंत्रता संग्राम की बज रही रणभेरी से निर्मित ज्वालामयी परिस्थितियों ने दिनकर का मार्ग प्रशस्त किया। युग की तमिस्रा में किस ज्योति की रागिनी गाएँ यह प्रश्न उनके सामने था और शीघ्र ही युग की चतुर्दिक जागृति ने क्रांति की शृंगी फूँक कर महान् प्रभाती-राग गाने की प्रेरणा दी। प्रभाती जिससे सुप्त भुवन के प्राण जाग उठे, जो आवाज़ भारतीय मानस में सोते हुए शार्दूल को चुनौती भेज सके, जो युगधर्म के प्रति जनता को जागरूक कर सके, जिसको सुन कर युग-युग से थमी हुई भारतीय जनता के निर्बल प्राणों में क्रांति की चिनगारियाँ उड़ने लगें। ' रेणुका' के राष्ट्रीय गीत इतिहास और संस्कृति के ऐसे ही आवरण में लिखे गए। अपने पूर्ववर्ती राष्ट्रीय कवियों की परम्परा का अनुसरण करके उन्होंने भी इतिहास को काव्य में ध्वनित करने की चेष्टा की। वर्तमान के चित्रपटी पर अतीत का सम्भाव्य बनाना चाहा –

प्रियदर्शन इतिहास कंठ में
आज ध्वनित हो काव्य बने,
वर्तमान के चित्रपटी पर,
भूतकाल सम्भाव्य बनें।[1]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

युगदर्शन की पहली प्रतिक्रिया ने दिनकर को छायावाद के रंगीन झिलमिले वातावरण और कुहासे से बाहर निकाला। उनकी कविता ने आकाश कल्पनाओं, चंद्रकिरणों और इतिहास के खंडहरों से निकल कर वनफूलों की ओर जाने का आग्रह किया; धान के खेतों में काम करती हुई कृषक सुंदरियों के स्वर में अटपटे गीत गाना चाहा और सूखी रोटी खाकर भूख मिटाने वाले किसान की तृष्णा बुझाने के लिए गंगाजल बनने की आकांक्षा प्रकट की।

बिट्रिश साम्राज्यवादियों की जिस कूटनीति और षड्यंत्रों से भारत की बहुसंख्यक जनता को खंड–खंड करने की योजना बनाई गई थी, उससे महात्मा गाँधी को बहुत निराशा हुई। उन्होंने उसकी अखंडता के लिए अनशन किया। संपूर्ण भारत में असंतोष की जो लहर फैली उससे दिनकर भी प्रभावित हुए। ' रेणुका' की बोधिसत्व कविता इसी अछूतोद्धार आंदोलन की प्रेरणा से लिखी गई। गाँधी की अहिंसा नीति के विरोधी होते हुए भी उन्होंने भारतीय सामाजिक व्यवस्था की मूल विषमताओं पर कुठाराघात किया। उन्होंने घृणा सिखाकर निर्वाण दिलाने वाले दर्शन की भर्त्सना की, धन पर आधारित धर्म की विषम व्यवस्थाओं पर व्यंग्यपूर्ण आघात किया।[1,2,3]

पर, गुलाब जल में गरीब के अश्रु राम क्या पायेंगे?
बिना नहाए इस जल में क्या नारायण कहलायेंगे?
मनुज मेघ के पोषक दानव आज निपट निर्द्वंद्व हुए?
कैसे बचें दीन? प्रभु भी, धनियों के गृह में बंद हुए?[2]

अंधविश्वासी रूढ़ीवादी पंडितों ने गाँधी की इस नीति का कर्कश विरोध किया। उन्हें धर्म का खण्डनकर्ता मानकर उनके प्राण लेने की चेष्टाएँ की गई। इसी प्रकार की एक घटना देवघर (बिहार) में हुई। दिनकर ने व्यापक युगधर्म की याद दिलाकर बोधिसत्व का आह्वान इन शब्दों में किया –

जागो, गाँधी पर किए गए नरपशु-पतितों के वारों से,
जागो, मैत्री-निर्घोष! आज व्यापक युगधर्म पुकारों से।
जागो गौतम! जागो महान!
जागो अतीत के क्रांति गान!
जागो, जगती के धर्म–तत्त्व!
जागो, हे! जागो बोधिसत्त्व![3]

जब स्वदेशी आंदोलन द्वारा व्यापारिक शोषण पर आधारित साम्राज्यवाद की नींव हिलने लगी, लंकाशायर और मैनचेस्टर के व्यापार का दिवाला निकलने लगा, तब अंग्रेज़ों ने रक्तपात, त्रास और दमन-नीति का सहारा लिया। "कस्मै देवाय?" कविता में दिनकर ने इस शोषण का मर्मस्पर्शी चित्र खींचा है –

शुभ्र वसन वाणिज्य-न्याय का,
आज रुधिर से लाल हुआ है,
किरिच-नोक पर अवलंबित,
व्यापार, जगत बेहाल हुआ है।[4]

किसानों का आर्थिक शोषण और किसान-आंदोलन को दबाने के लिए किए गए अमानुषिक और पाशविक कार्यों का प्रतिशोध लेने के लिए दिनकर ने भूषण की भावरंगिनी और लेलिन की क्रांति-चेतना का आह्वान किया –

देख, कलेजा फाड़ कृषक
दे रहे, हृदय-शोणित की धारें;
बनती ही उनपर जाती है
वैभव की ऊँची दीवारें।
धन-पिशाच के कृषक-मेघ में
नाच रही पशुता मतवाली,
आगंतुक पीते जाते हैं
दीनों के शोणित की प्याली।
उठ भूषण की भावरंगिणी!
लेलिन के दिल की चिनगारी,
युग-मर्दित यौवन की ज्वाला!
जाग-जाग, री क्रांति कुमारी![5]

' रेणुका' में क्रांति की जो चिनगारियाँ धीरे-धीरे सुलग रहीं थीं, 'हुंकार' में प्रज्वलित अग्नि का रूप धारण कर लेती हैं। दिनकर अतीत का आँचल छोड़कर वर्तमान में आते हैं। दो महान् शक्तियों के वज्रसंघात की चिनगारियाँ संपूर्ण भारत-भूमि पर फैल गईं। एक ओर ब्रिट्रिश साम्राज्य की संहारक और ध्वंसक शक्ति तो दूसरी ओर भारतीय जनता के त्याग का

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

अपार बल। ज्वालाओं से घिरे हुए रुधिर-सिक्त वातावरण में उन्होंने क्रांति के गीत गाए। पराधीन देश के कवि की भावनाएँ, प्रकाशन और मुद्रण पर लगे हुए प्रतिबंधों के कारण विवश और असहाय हो उठीं। विवशता में भी दिनकर के क्रांति, विद्रोह और आक्रोश का स्वर मंद नहीं हुआ। उन्होंने ब्रिट्रिश-दमन नीति को चुनौती दी; गला फाड़-फाड़ कर गाया -

वर्तमान की जय अभीत हो, खुलकर मन की पीर बजे,
एक राग मेरा भी रण में, बंदी की ज़ंजीर बजे।
नई किरण की सखी, बाँसुरी, के छिद्रों से कूक उठे,
साँस-साँस पर खड्ग-धार पर नाच हृदय की हूक उठे।[6]

उन्होंने नव जागृति-काल के जलते हुए तरुणों और मूक होकर अत्याचार सहती हुई जनशक्ति को क्रांति की चुनौती दी –

नये प्रात के अरुण! तिमिर-उर में मरीचि-संधान करो,
युग के मूक शैल! उठ जागो, हुंकारों, कुछ गान करो।[7]

'असमय आह्वान' कविता में व्यक्त अंतर्द्वंद्व केवल दिनकर के मन का ही द्वंद्व नहीं है, उनके युग के युवक वर्ग का द्वंद्व है, जो जीवन में राग और रण का सामना एक साथ कर रहा था। दिनकर ने रजनीबाला के अवतंस और मंजीर, विधु के मादक शृंगार से संबंध तोड़कर रजतशृंगी से भैरव नाद फूँका। मृतिका-पुत्र दिनकर ने विवस्वान के प्रकाशपुंज को चुनौती दी –

ज्योतिधर कवि मैं ज्वलित सौर-मंडल का,
मेरा शिखंड अरुणाभ, किरिट अनल का।
रथ में प्रकाश के अश्व जुतें हैं मेरे
किरणों में उज्ज्वल गीत गुँथे हैं मेरे।[8]

'हाहाकार' कविता में उनकी दृष्टि चारों ओर फैले हुए शोषण, अत्याचार और राजनीतिक दमन पर केंद्रित हुई। विजित, पराजित और शोषित की सहिष्णुता तथा शांति का उपहास करते हुए उन्होंने कहा –

टाँक रही हो सुई चर्म पर, शांत रहे हम, तनिक न डोलें,
यही शांति, गरदन कटती हो, पर हम अपनी जीभ न खोलें।
शोणित से रंग रही शुभ्र पट, संस्कृति निष्ठुर करवालें
जला रही निज सिंहपौर पर, दलित-दीन की अस्थि मशालें।[9]

'अनल किरीट' में उन्होंने जनशक्ति को अत्याचारी शासक वर्ग की टक्कर में मर मिटने की चुनौती दी। 'भीख' में उन्होंने भगवान से लहू की आग, मन का तूफान, असंतोष की चिनगारी, शोणित के अश्रु और अंगार माँगे हैं ताकि क्रांति की ज्वाला फूट पड़े।[4,5,6]

'पराजितों की पूजा' और 'कल्पना की दिशा' इस प्रसंग में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये दोनों ही कविताएँ उस समय लिखी गयीं थी जब गाँधी ने सत्याग्रह-आंदोलन रोकने की आज्ञा दे दी थी – जब सुभाष, जवाहर और जय प्रकाश का खौलता हुआ खून गाँधी के शांति और समझौते की नीति से ठण्डा किए जाने को तैयार नहीं था। जिस सविनय अवज्ञा आंदोलन के लिए कांग्रेस अध्यक्ष ने भारतीय जनता को उसकी दृढ़ता और अपराजेय शक्ति के लिए बधाई दी थी, उग्रदल के युवक नेता उसे गाँधी तथा भारत की पराजय मानते थे। उनका उष्ण रक्त साम्राज्यवादी सत्ता को निकाल बाहर करने के लिए उबल रहा था। दिनकर ने भी इसे भारत की पराजय ही माना। उन्हें लगा कि गाँधी की नीति भारत की जवानी को, उसकी प्रज्वलित ज्वाला को मिट्टी में मिला रही है। गोरा-बादल की माँ और जौहर की रानी का तेज प्रशमित कर उनके साथ अन्याय कर रही है। उनके मन की ज्वाला तलवार चलाने पर प्रतिबंध के कारण घुटने लगी, मन का तूफ़ान अवरुद्ध होकर बोल उठा –

जीवन का यह शाप सेवते हम शैलों के मूल रहे;
बर्फ गिरे रोज, बेबस खिलते-मुरझाते फूल रहें
बँधी धार, अवरुद्ध प्रभंजन, वनदेवी श्रीहीन हुई,
एक-एक कर बुझी शिखाएँ, वसुधा वीर-विहीन हुई।[10]

जब गाँधी ने अंग्रेज़ों की तोप का उत्तर तकली और चरखे से देने का निर्णय किया तो दिनकर ने लिखा –

ऊब गया हूँ देख चतुर्दिक अपने
अजा-धर्म का ग्लानि विहीन प्रवर्तन
युग-सत्तम संबुद्ध पुन: कहता है,
ताप कलुष है, शिख बुझा दो मन की
****
तुम कहते हो शिखा बुझा दो, लेकिन
आग बुझी, तो पौरुष शेष रहेगा?[11]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

स्वतंत्रता के पश्चात् दिनकर द्वारा लिखे हुए प्रमुख ग्रंथ हैं – "रश्मिरथी", "नीलकुसुम", "नए

सुभाषित", "उर्वशी" और "परशुराम की प्रतीक्षा"। "रश्मिरथी" परंपरा के मोह से लिखा हुआ प्रबंध काव्य है जिसमे कुंती के 'अवैधपुत्र' अथवा 'सूतपुत्र' कर्ण की गौरव-गाथा का गान हुआ है। कर्ण के चरित्र के द्वारा सामाजिक प्रश्नों को उठाया गया है। इसकी पृष्ठभुमि में कोई विशेष ऐतिहासिक घटना नहीं है बल्कि इसकी मूल प्रेरणा सामाजिक है। "नील कुसुम" की कुछ रचनाओं की पृष्ठभूमि में भारत की राजनीति के विविध पक्षों, पंचशील के सिद्धांतों तथा अन्य सामाजिक घटनाओं को ग्रहण किया गया है। इस प्रसंग में 'जनतंत्र का जन्म' कविता उल्लेखनीय है जो 26 जनवरी, 1950 को भारत के गणतंत्र के निर्माण के अवसर पर लिखी गई थी। इस कविता की प्रसिद्ध पंक्ति है –

"सदियों की ठंढी –बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है ;
दो राह, समय के रथ का घर्घर –नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"[12]

'किसको नमन करूँ मैं', 'राष्ट्रदेवता का विसर्जन' और 'हिमालय का संदेश' कविताओं में दिनकर राष्ट्रवाद की सीमा का अतिक्रमण कर विश्वबंधुत्व की ओर बढ़ रहे थे तथा 'नये सुभाषित' की कुछ कविताओं में वर्तमान व्यवस्थाओं की विषमताओं पर हल्के-फुल्के छींटे डाल रहे थे कि चीन के आक्रमण ने उन्हें फिर राष्ट्रवाद की ओर मोड़ दिया। यहाँ यह तथ्य स्मरणीय है कि दिनकर का आक्रोश केवल चीन के आसुरी वृत्ति के प्रति नहीं है, वे चीन के आक्रमण के लिए भारतीय राजतंत्र और विचार दर्शन को उत्तरदायी मानते हैं। सत्ताधारी राजनीतिज्ञों की निर्वीर्य शांति नीति, उनके अनुसार चीन के इस दुस्साहस के लिए उत्तरदायी है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' की पृष्ठभूमि में चीन के आक्रमण की घटना उतनी नहीं है जितनी उसके लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ। इस कविता में गाँधीवाद के नाम पर चलती हुई कृत्रिम आध्यात्मिकता तथा निर्वीर्य कल्पनाओं का खंडन और विरोध किया गया है। भारत की शांति और तटस्थ नीति की अव्यवहारिकता और भ्रांत आत्मप्रधान दर्शन का विरोध किया गया है तथा राजनीतिक सत्ताधारियों के भ्रष्टाचारों और आंतरिक अव्यवस्थाओं की ओर संकेत किया गया है –

घातक है जो देवता सदृश दिखता है,
लेकिन, कमरे में गलत हुक्म लिखता है।
जिस पापी को गुण नहीं, गोत्र प्यारा है,
समझो उसने ही हमें यहाँ मारा है।
जो सत्य जान कर भी न सत्य कहता है,
या किसी लोभ से विवश मूक रहता है।
उस कुटिल राजतंत्री कदर्य को धिक् है,
यह मूक सत्यहंता कम बधिक नहीं है।[13]

इस प्रकार हम पाते हैं कि स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्र्योत्तर दोनों ही युगों में दिनकर की कविताओं में समान रूप से क्रांति और विद्रोह का स्वर ध्वनित हुआ है। राष्ट्रीयता का ओजस्वी स्वर जो राष्ट्रकवि दिनकर की रचनाओं में दृष्टिगत होता है, उनके समकालीन एवं परवर्ती किसी भी अन्य कवि में नहीं दिखाई देता। ओज और पौरुष का यही भाव उन्हें अपने समय का सूर्य तथा संपूर्ण अर्थ में राष्ट्रकवि बनाता है।

विचार-विमर्श

हिंदी साहित्य में दिनकर की पहचान राष्ट्रकवि के रूप में है। उनका साहित्य राष्ट्रीय जागरण व संघर्ष के आह्वान का जीता-जागता दस्तावेज़ है। दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है।

हुंकार, रेणुका, इतिहास के आँसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर को उभारा है। इनमें कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना का संचार है। यह सब तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के लिये अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ।

दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना एक अन्य स्तर पर वहाँ दिखाई देती है, जहाँ वे शोषण का प्रतिकार करने का समर्थन करते हैं। वे कहते हैं कि यदि कोई हमारे साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करे तो नैतिकता का तकाजा युद्ध करना ही है न कि अनैतिकता को स्वीकार करना-

"छीनता हो स्वत्व कोई और तू
त्याग तप से काम ले, यह पाप है"

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

संघर्ष के आह्वान के साथ दिनकर जी ने प्राचीन भारतीय आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना के माध्यम से भी राष्ट्रीय जागरण व राष्ट्रीय गौरव की भावनाओं को जगाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

दिनकर जी की राष्ट्रीय चेतना संकीर्ण नहीं है। यह न केवल ब्रिटिश राज्य का विरोध करने वाली है अपितु स्वतंत्रता के बाद भी जनता के सामाजिक-आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाली है। कवि ने 'दिल्ली', 'नीम के पत्ते', 'परशुराम की प्रतिज्ञा' में स्वतंत्रता-उपरांत जनजीवन में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषमताओं का चित्रण किया है-

"सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है।
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियारा है।"

इस प्रकार यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि दिनकर जी के यहाँ राष्ट्रीय चेतना उसी स्तर पर व्यक्त हुई है जो उन्हें भारतेन्दु, गुप्त जी की परंपरा में स्थान दिलवाती है।[7,8,9]

परिणाम

रामधारी सिंह (23 सितंबर 1908 - 24 अप्रैल 1974), जिन्हें उनके उपनाम दिनकर से जाना जाता है , एक भारतीय हिंदी भाषा के कवि, निबंधकार, स्वतंत्रता सेनानी, देशभक्त और शिक्षाविद् थे। [1] भारतीय स्वतंत्रता से पहले के दिनों में लिखी गई उनकी राष्ट्रवादी कविता के परिणामस्वरूप वह विद्रोह के कवि के रूप में उभरे । उनकी कविता में वीर रस (वीर भावना) झलकता था, और उनकी प्रेरक देशभक्ति रचनाओं के कारण उन्हें राष्ट्रकवि ('राष्ट्रीय कवि') और युग-चरण (युग का चरण) के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। [2] [3] वह हिंदी कवि सम्मेलन के नियमित कवि थे और उन्हें हिंदी भाषियों के लिए उतना ही लोकप्रिय और कविता प्रेमियों से जुड़ा हुआ माना जाता है जितना रूसियों के लिए पुश्किन का । [4]

उल्लेखनीय आधुनिक हिंदी कवियों में से एक, दिनकर का जन्म ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रेसीडेंसी के सिमरिया गांव में हुआ था , जो अब बिहार राज्य में बेगुसराय जिले का हिस्सा है । सरकार ने उन्हें वर्ष 1959 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया था और उन्हें तीन बार राज्यसभा के लिए भी नामांकित किया था । इसी तरह, उनके राजनीतिक विचार को महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स दोनों ने काफी हद तक आकार दिया था । दिनकर ने स्वतंत्रता-पूर्व काल में अपनी राष्ट्रवादी कविता के माध्यम से लोकप्रियता हासिल की। [5]

दिनकर ने शुरू में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थन किया , लेकिन बाद में गांधीवादी बन गए । हालाँकि, वह खुद को "खराब गांधीवादी" कहते थे क्योंकि वह युवाओं में आक्रोश और बदले की भावना का समर्थन करते थे। [6] कुरूक्षेत्र में उन्होंने स्वीकार किया कि युद्ध विनाशकारी है लेकिन तर्क दिया कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह आवश्यक है। वह उस समय के प्रमुख राष्ट्रवादियों जैसे राजेंद्र प्रसाद , अनुग्रह नारायण सिन्हा , श्री कृष्ण सिन्हा , रामबृक्ष बेनीपुरी और ब्रज किशोर प्रसाद के करीबी थे।

दिनकर तीन बार राज्यसभा के लिए चुने गए , और वह 3 अप्रैल 1952 से 26 जनवरी 1964 तक इस सदन के सदस्य रहे, [6] और 1959 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। [6] वह राज्यसभा के कुलपति भी थे। 1960 के दशक की शुरुआत में भागलपुर विश्वविद्यालय (भागलपुर, बिहार)।

आपातकाल के दौरान , जयप्रकाश नारायण ने रामलीला मैदान में एक लाख (100,000) लोगों की भीड़ को आकर्षित किया था और दिनकर की प्रसिद्ध कविता: सिंहासन खाली करो के जनता आती है ('सिंहासन खाली करो, लोग आ रहे हैं') का पाठ किया था। [8,9]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

जीवनी

दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को सिमरिया गांव, बंगाल प्रेसीडेंसी , ब्रिटिश भारत (अब बिहार के बेगुसराय जिले में) में एक भूमिहार परिवार में हुआ था [9] [10] बाबू रवि सिंह और मनरूप देवी के घर। उनकी शादी बिहार के समस्तीपुर जिले के टभका गांव में हुई थी. एक छात्र के रूप में, उनके पसंदीदा विषय इतिहास, राजनीति और दर्शन थे। स्कूल में और बाद में कॉलेज में, उन्होंने हिंदी, संस्कृत , मैथिली , बंगाली , उर्दू और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। दिनकर रवीन्द्रनाथ टैगोर , कीट्स और मिल्टन से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद किया । [11] कवि दिनकर का काव्यात्मक व्यक्तित्व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जीवन के दबावों और प्रति-दबावों से निर्मित हुआ था । [6] [8] एक लंबा आदमी, ऊंचाई 5 फीट 11 इंच (1.80 मीटर), चमकदार सफेद रंग, लंबी ऊंची नाक, बड़े कान और चौड़े माथे के साथ, उसकी शक्ल ध्यान देने योग्य थी। [6] [8] उन्होंने 1950-1952 तक लंगट सिंह कॉलेज , मुजफ्फरपुर , बिहार में हिंदी शिक्षक के रूप में काम किया । [12]

एक छात्र के रूप में, दिनकर को दिन-प्रतिदिन के मुद्दों से जूझना पड़ता था, जिनमें से कुछ उनके परिवार की आर्थिक परिस्थितियों से संबंधित थे। जब वह मोकामा हाई स्कूल के छात्र थे, तो उनके लिए शाम चार बजे स्कूल बंद होने तक रुकना संभव नहीं था [8] क्योंकि लंच ब्रेक के बाद उन्हें घर वापस स्टीमर पकड़ने के लिए क्लास छोड़नी पड़ती थी। [8] वह छात्रावास में रहने का जोखिम नहीं उठा सकता था, जिससे उसे सभी अवधियों में भाग लेने में मदद मिलती। [8] जिस छात्र के पैरों में जूते नहीं हों, वह छात्रावास की फीस कैसे भरेगा? बाद में उनकी शायरी पर गरीबी का असर दिखा। [8] यही वह माहौल था जिसमें दिनकर बड़े हुए और उग्र विचारों वाले राष्ट्रवादी कवि बने। [8] 1920 में दिनकर ने पहली बार महात्मा गांधी को देखा। [8] लगभग इसी समय उन्होंने सिमरिया में मनोरंजन पुस्तकालय की स्थापना की। [8] उन्होंने एक हस्तलिखित पुस्तिका का संपादन भी किया। [8]

रचनात्मक संघर्ष

जब दिनकर ने किशोरावस्था में कदम रखा, तब तक महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन शुरू हो चुका था । [8] 1929 में, जब मैट्रिक के बाद उन्होंने इंटरमीडिएट की पढ़ाई के लिए पटना कॉलेज में प्रवेश लिया; यह आंदोलन आक्रामक होने लगा. [8] 1928 में साइमन कमीशन आया, जिसके ख़िलाफ़ देशव्यापी प्रदर्शन हो रहे थे। [8] पटना में भी मग़फ़ूर अहमद अज़ाज़ी के नेतृत्व में प्रदर्शन हुए [13] और दिनकर ने भी शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर किये। [8] गांधी मैदान की रैली में हजारों लोग आये जिसमें दिनकर ने भी भाग लिया। [8] साइमन कमीशन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश सरकार की पुलिस ने पंजाब के शेर लाला लाजपत राय पर बेरहमी से लाठियां बरसाईं , जिससे उनकी मौत हो गई। [8] पूरे देश में उथल-पुथल मच गई। [8] इन आंदोलनों के कारण दिनकर का युवा मन तेजी से उग्र होता गया। उनका भावुक स्वभाव काव्यात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत था। [8]

दिनकर की पहली कविता 1924 में छात्र सहोदर ('छात्रों का भाई') नामक पत्र में प्रकाशित हुई थी । छत्र सहोदर नरसिंह दास के संपादन में स्थापित एक स्थानीय समाचार पत्र था। [8] 1928 में सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में गुजरात के बारडोली में किसानों का सत्याग्रह सफल हुआ । [8] उन्होंने इस सत्याग्रह पर आधारित दस कविताएँ लिखीं जो विजय-संदेश ('विजय का संदेश') शीर्षक के तहत एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुईं । [8] यह रचना अब उपलब्ध है। [8] पटना कॉलेज के ठीक सामने युवक का कार्यालय संचालित होता था। [8] सरकार के प्रकोप से बचने के लिए दिनकर की कविताएँ "अमिताभ" उपनाम से प्रकाशित की गईं। [8] 14 सितंबर 1928 को जतिन दास की शहादत पर उनकी एक कविता प्रकाशित हुई। [8] इसी समय के आसपास उन्होंने बीरबाला और मेघनाद-वध नामक दो छोटी कविताएँ लिखीं , लेकिन उनमें से कोई भी अब उपलब्ध नहीं है। [8] 1930 में उन्होंने प्राण-भंग ('प्रतिज्ञा का उल्लंघन') नामक कविता की रचना की , जिसका उल्लेख रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में किया है। [8] अत: उनके काव्य जीवन की यात्रा विजय-संदेश से आरंभ मानी जानी चाहिए । [8] इससे पहले उनकी कविताएँ पटना से प्रकाशित होने वाली पत्रिका देश और कन्नौज से प्रकाशित होने वाली पत्रिका प्रतिभा की लगातार प्रमुखता बनी थीं । [8]

दिनकर का पहला कविता संग्रह, ' रेणुका ' नवंबर 1935 में प्रकाशित हुआ था। [8] विशाल भारत के संपादक बनारसी दास चतुर्वेदी ने लिखा था कि हिंदी भाषी लोगों को 'रेणुका ' के प्रकाशन का जश्न मनाना चाहिए । [8] इसी समय के आसपास, चतुर्वेदीजी सेवाग्राम गये । [8] वे अपने साथ रेणुका की एक प्रति भी ले गये । [8] इसकी प्रति महात्मा गांधी को दी गई थी । [8]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

कहा जाता है कि मशहूर इतिहासकार डॉ. काशी प्रसाद जयसवाल उन्हें बेटे की तरह प्यार करते थे। दिनकर के काव्य जीवन के शुरुआती दिनों में, जायसवाल ने उनकी हर तरह से मदद की। [8] 4 अगस्त 1937 को जायसवाल की मृत्यु हो गई, जो युवा कवि के लिए एक बड़ा झटका था। [8] बहुत बाद में, उन्होंने हैदराबाद से प्रकाशित पत्रिका कल्पना में लिखा , "यह अच्छी बात थी कि जयसवालजी मेरे पहले प्रशंसक थे। अब जब मैंने सूर्य, चंद्रमा, वरुण, कुबेर, इंद्र के प्यार और प्रोत्साहन का स्वाद चखा है।" , बृहस्पति, शची और ब्रह्माणी, यह स्पष्ट है कि उनमें से कोई भी जयसवालजी जैसा नहीं था, जैसे ही मैंने उनकी मृत्यु की खबर सुनी, मेरे लिए दुनिया एक अंधेरी जगह बन गई। [8] दिनकर के काव्य में ऐतिहासिक बोध की सराहना करने वाले जयसवाल जी पहले व्यक्ति थे। [9,10]

कार्य

उनकी रचनाएँ अधिकतर वीर रस , या 'बहादुर विधा' की हैं, हालाँकि उर्वशी इसका अपवाद है। उनकी कुछ महान कृतियाँ हैं ' रश्मिरथी' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' । भूषण के बाद उन्हें 'वीर रस' का सबसे बड़ा हिंदी कवि माना जाता है। [6]

आचार्य (शिक्षक) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि दिनकर उन लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय थे जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी और वह अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम के प्रतीक थे। [14] हरिवंश राय बच्चन ने लिखा कि उचित सम्मान के लिए दिनकर को चार भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने चाहिए - कविता, गद्य , भाषाओं और हिंदी की सेवा के लिए । [14] रामबृक्ष बेनीपुरी ने लिखा कि दिनकर देश में क्रांतिकारी आंदोलन को आवाज दे रहे हैं। [14] नामवर सिंह ने लिखा है कि वे सचमुच अपने युग के सूर्य थे। [14]

हिंदी लेखक राजेंद्र यादव , जिनके उपन्यास सारा आकाश में भी दिनकर की कविता की कुछ पंक्तियाँ हैं, ने उनके बारे में कहा है, "वह हमेशा पढ़ने के लिए बहुत प्रेरणादायक थे। उनकी कविता पुनर्जागृति के बारे में थी। वह अक्सर हिंदू पौराणिक कथाओं में डूबे रहते थे और महाकाव्यों के नायकों का उल्लेख करते थे।" जैसे कि कर्ण ।" [15] जाने-माने हिंदी लेखक काशीनाथ सिंह कहते हैं , वह साम्राज्यवाद-विरोधी और राष्ट्रवाद के कवि थे । [15]

उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य भी लिखे [16] जिसका उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और वंचितों का शोषण था। [16]

एक प्रगतिशील और मानवतावादी कवि, उन्होंने इतिहास और वास्तविकता को सीधे देखने का विकल्प चुना और उनकी कविता में वक्तृत्वपूर्ण शक्ति के साथ भाषणात्मक शैली का मिश्रण था। उर्वशी का विषय प्यार, जुनून और आध्यात्मिक स्तर पर पुरुष और महिला के रिश्ते के इर्द-गिर्द घूमता है, जो उनके सांसारिक रिश्ते से अलग है। [10,11]

उनकी 'कुरुक्षेत्र' महाभारत के शांति पर्व पर आधारित एक कथात्मक कविता है । [18] यह उस समय लिखा गया था जब कवि के मन में द्वितीय विश्व युद्ध की यादें ताजा थीं। [18]

कृष्ण की चैतवानी उन घटनाओं के बारे में लिखी गई एक और कविता है जो महाभारत में कुरुक्षेत्र युद्ध का कारण बनी। उनकी सामधेनी राष्ट्र की सीमाओं से परे कवि के सामाजिक सरोकार को प्रतिबिंबित करने वाली कविताओं का संग्रह है। [18]

उनकी रश्मिरथी को हिंदू महाकाव्य महाभारत के कर्ण के जीवन की सर्वश्रेष्ठ पुनर्कथनों में से एक माना जाता है ।

निष्कर्ष

अपने 'संस्कृति के चार अध्याय' में उन्होंने कहा कि विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और स्थलाकृति के बावजूद , भारत एकजुट है, क्योंकि "हम कितने भी अलग क्यों न हों, हमारे विचार एक ही हैं"। [20] दिनकर ने भारत की संस्कृति के इतिहास को चार प्रमुख मुठभेड़ों के संदर्भ में देखकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की समझ को और अधिक प्रत्यक्ष बना दिया: ऑटोचथॉन (स्वदेशी लोग); वैदिक मान्यताओं और बुद्ध तथा महावीर द्वारा प्रतिपादित दर्शन के बीच ; हिंदू धर्म और इस्लाम के बीच ; और अंततः यूरोपीय सभ्यता और भारतीय जीवन शैली और शिक्षा के बीच। [21] इतिहास के विभिन्न कालखंडों में हुई इन मुठभेड़ों ने भारत की संस्कृति को मजबूती प्रदान की है। [21] भारत के सभ्यतागत इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी उल्लेखनीय सहिष्णुता और दुनिया को एक संदेश देने की क्षमता वाला मानवीय दृष्टिकोण है[11,12]

इतिहास केवल तथ्यों का संकलन नहीं है। [8] इतिहास वैचारिक दृष्टिकोण से लिखा जाता है। [8] कवि दिनकर ने स्वतंत्रता आंदोलन से उभरे मूल्यों के संदर्भ में संस्कृति के चार अध्याय लिखी। [8] इतिहास के क्षेत्र में जिस राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया गया, वही दिनकर ने संस्कृति के क्षेत्र में प्रतिपादित किया। [8] स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में विकसित हुए

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

मूल्य ही इस पुस्तक का परिप्रेक्ष्य निर्धारित करते हैं। [8] वे मूल्य उपनिवेशवाद-विरोधी , धर्मनिरपेक्षता और एकीकृत संस्कृति के विचार हैं। [8] यह किताब इन्हीं मूल्यों को लेकर लिखी गई है। दिनकर भारतीय संस्कृति के राष्ट्रवादी इतिहासकार हैं । [8]

चार विशाल अध्यायों में विभाजित प्रथम अध्याय में पूर्व- वैदिक काल से लेकर लगभग 20वीं शताब्दी के मध्य तक भारत की संस्कृति के स्वरूप एवं विकास की चर्चा की गई है। [8] दूसरे अध्याय में प्राचीन हिंदू धर्म के विरुद्ध विद्रोह के रूप में विकसित हुए बौद्ध और जैन धर्मों का विश्लेषण किया गया है। [8] तीसरे अध्याय में, इस्लाम के आगमन के बाद हिंदू संस्कृति पर उसके प्रभाव के साथ-साथ हिंदू-मुस्लिम संबंधों, जैसे - प्रकृति, भाषा, कला और संस्कृति पर इस्लाम के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। [8] इस अध्याय में भक्ति आंदोलन और इस्लाम के आपसी संबंधों की अत्यंत प्रामाणिक पड़ताल प्रस्तुत की गयी है। [8] इस सन्दर्भ में यह भी विचार किया गया है कि भारत की संस्कृति किस प्रकार एकीकृत स्वरूप प्राप्त करती है। [8] चौथे अध्याय में भारत में यूरोपीय लोगों के आगमन के बाद से शिक्षा के उपनिवेशीकरण और ईसाई धर्म का हिंदू धर्म से टकराव आदि का भी विस्तृत विवरण दिया गया है। [8] इस अध्याय में 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण की जांच के साथ-साथ पुनर्जागरण के प्रमुख नेताओं के योगदान पर व्यापक चर्चा की गई है। [8] इस अध्याय की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इसमें हिंदू पुनर्जागरण और उसके साथ मुस्लिम पुनर्जागरण और उसकी सीमाओं का प्रचुर विवरण प्रस्तुत किया गया है। [8] [21]

दिनकर :
विभिन्न नस्लों, भाषाओं और धर्मों से संबंधित लोगों के बीच अंतर-मिश्रण और सांस्कृतिक सद्भाव के उदाहरण कुछ अन्य देशों (जैसे मेक्सिको और प्राचीन ग्रीस) में भी उपलब्ध हैं, लेकिन भारत जितनी हद तक नहीं। दुनिया में लोगों के केवल चार रंग हैं - सफेद, गेहुंआ, काला और पीला - और ये चारों रंग भारतीय आबादी में प्रचुर मात्रा में मिश्रित हैं। भाषाई दृष्टि से भी इस देश में सभी प्रमुख भाषा परिवारों की संतानें एक साथ रहती हैं। और जहां तक धर्म का सवाल है, समग्र रूप से भारत शुरू से ही, दुनिया के सभी प्रमुख धर्मों के लिए एक साझा भूमि रही है। तिरुवंकुर के भारतीय इंग्लैंड के लोगों से बहुत पहले ईसाई बन गए थे, और इस्लाम शायद मोपलाओं के बीच पहले ही आ चुका था, जबकि पैगंबर मोहम्मद अभी भी जीवित थे। इसी प्रकार, जोरोस्टर के अनुयायी दसवीं शताब्दी से भारत में निवास कर रहे हैं। जब अरब मुसलमानों ने ईरान पर कब्ज़ा कर लिया और वहां अपने धर्म का प्रचार करना शुरू कर दिया, तो पारसी लोग ईरान से भाग गए और भारत में आकर बस गए। जब रोमन अत्याचार के तहत यहूदी मंदिर ढहने लगे, तो कई यहूदी अपनी आस्था बचाने के लिए भारत भाग गए और तब से वे दक्षिण भारत में खुशी से रह रहे हैं। इसलिए, ईसाई धर्म, इस्लाम, यहूदी धर्म और पारसी धर्मों का भारत पर उतना ही दावा है जितना हिंदू धर्म या बौद्ध धर्म का है।

[22] भारत की समग्र संस्कृति के बारे में दिनकर के इतिहासलेखन का विशाल विहंगम अवलोकनएक प्रकार
के डार्विनवादी विकासवाद पर आधारित है। [22] दिनकर की कल्पना का भारत का विचार आत्मसात राष्ट्रवाद केअमेरिकी
' मेल्टिंग पॉट ' मॉडल की याद दिलाता है। [22]

पुरस्कार एवं सम्मान

उन्हें काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कार मिला और उनके महाकाव्य कुरूक्षेत्र के लिए भारत सरकार से भी पुरस्कार मिला । [6] उनकी रचना संस्कृति के चार अध्याय के लिए उन्हें 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला । [23] उन्हें 1959 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया था । उन्हें भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा एलएलडी की डिग्री से सम्मानित किया गया था । गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा उन्हें विद्यावाचस्पति के रूप में सम्मानित किया गया। [6] उन्हें 8 नवंबर 1968 को राजस्थान विद्यापीठ , उदयपुर द्वारा साहित्य-चूड़ामन के रूप में सम्मानित किया गया था । [6] दिनकर को 1972 में उर्वशी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । [24] वह 1952 में राज्य सभा के मनोनीत सदस्य भी बने। दिनकर के प्रशंसक व्यापक रूप से मानते हैं कि वह वास्तव में राष्ट्रकवि (भारत के कवि) के सम्मान के पात्र थे । [

मृत्यु

दिनकर की 24 अप्रैल 1974 को दिल का दौरा पड़ने से मद्रास (अब चेन्नई) में मृत्यु हो गई। उनके पार्थिव शरीर को 25 अप्रैल को पटना ले जाया गया और गंगा नदी के तट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया । [25]

मरणोपरांत मान्यताएँ

30 सितंबर 1987 को, उनकी 79वीं जयंती के अवसर पर, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई । [26]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 7, Issue 10, October 2020 |

1999 में, दिनकर भारत की भाषाई सद्भाव का जश्न मनाने के लिए भारत सरकार द्वारा जारी किए गए स्मारक डाक टिकटों के सेट पर चित्रित हिंदी लेखकों में से एक थे , जो भारत द्वारा हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने की 50वीं वर्षगांठ थी। [27]

सरकार ने दिनकर की जन्मशती पर खगेंद्र ठाकुर द्वारा लिखित पुस्तक जारी की । [28]

उसी समय पटना में दिनकर चौक पर उनकी एक प्रतिमा का अनावरण किया गया , [29] और कालीकट विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया । [30]

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बेगुसराय जिले में महान हिंदी कवि रामधारी सिंह दिनकर के नाम पर एक इंजीनियरिंग कॉलेज राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग का उद्घाटन किया। [31]
प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 22 मई 2015 को नई दिल्ली में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की कृतियों के स्वर्ण जयंती समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए

22 मई 2015 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने विज्ञान भवन , नई दिल्ली में दिनकर की उल्लेखनीय कृतियों ' संस्कृति के चार अध्याय' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' के स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन किया ।[13]

संदर्भ

1. “रेणुका“ – दिनकर तृतीय संस्करण, पृ. 02 (’मंगल आह्वान’ कविता)
2. “रेणुका“ – दिनकर तृतीय संस्करण, पृ. 18
3. “रेणुका“ – दिनकर तृतीय संस्करण, पृ. 19
4. “रेणुका“ – दिनकर तृतीय संस्करण, पृ. 30
5. “रेणुका“ – दिनकर तृतीय संस्करण, पृ. 32
6. “हुंकार” -दिनकर प्रथम संस्करण, पृ.13 (’वर्तमान का निमंत्रण’ कविता)
7. “हुंकार” -दिनकर प्रथम संस्करण, पृ.14 (’वर्तमान का निमंत्रण ’ कविता)
8. “हुंकार” -दिनकर प्रथम संस्करण, पृ.16 (’आलोकधन्वा’ कविता)
9. “हुंकार” -दिनकर प्रथम संस्करण, पृ.23
10. “हुंकार ’’ - दिनकर प्रथम संस्करण, पृ. 55
11. “हुंकार”- दिनकर प्रथम संस्करण, पृ. 68
12. “नील कुसुम “-दिनकर प्रथम संस्करण, पृ.58
13. “परशुराम की प्रतीक्षा “-दिनकर प्रथम संस्करण, पृ.03